



अंतराष्ट्रीय योग दिवस 2024

NAYI GOONJ – SHODH, SAHITYA EVAM SANSKRITI (MONTHLY) MAGAZINE

## समाज के दो चेहरे

जफ़ा ए जख्मों की, कहानी कहती है।  
लाखों की भीड़ में, अकेली होती है।  
दिन के उजाले में मुस्कराकर,  
रातों को रोती है।  
घुटती है,  
जिस्म के अंदर  
न जाने कितने मंजर सहती है।  
जफ़ाएँ इतनी लिखी है, रूह पर।  
वो हर कलम को खंजर कहती है।  
चिखती -चिल्लाती वीरानों में,  
कभी घर में बंद रहती है।  
कोरे पन्नों पर स्याही,  
भावनाएं हासिए पर होती हैं।  
पकड कर पर्दों की बैसाखियां,  
रोज इंसानियत की दहलीज पर बैठकर,  
हंसती रोती है।



डॉ कंचन जैन "स्वर्णा"

